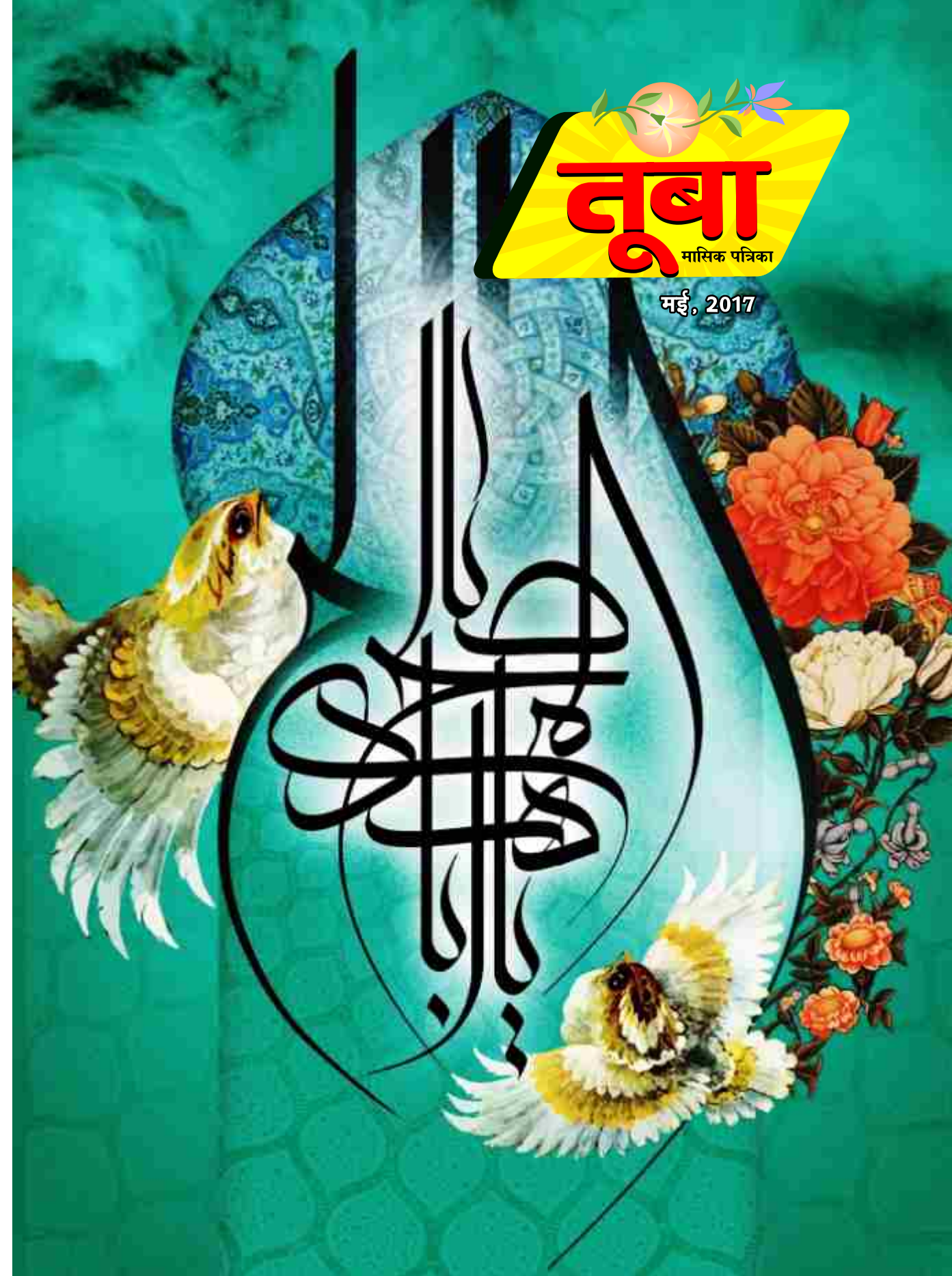


मई, 2017





اِنَّ الْمَسِيْنَ مَصْبَاۗهُ الْهُدٰى وَ سَخِيْبَتُ الْاٰمَةِ



# مصباح الہدی



★ تعمیری افکار ★ بدل گفتگو  
★ تحقیقی انداز ★ شگفتہ بیان  
فرمودات قرآن اور تعلیمات اہل بیت  
پر مشتمل مضامین پڑھنے کے لئے  
**مصباح (الہدی) اردو کے نمبر بنئے۔**

سہ ماہی **مصباح الہدی** (اردو) کے نمبر بنئے

قیمت فی شمارہ: ۶۰ روپیہ سالانہ: ۲۰۰ روپیہ رجسٹرڈ ڈاک سے: ۳۰۰ روپیہ

مدیر اعلیٰ: سید منظر صادق زیدی | مدیر: سید محمد ثقلین جوراسی | نائب مدیر: وقار حیدر اعظمی



**نई نسل**  
खास तौर पर  
जवानों के लिए  
हुदा मिशन की  
हिन्दी ज़बान में  
खास पेशकश



# दोमाही मिस्बाहुल हुदा

दोमाही "मिस्बाहुल हुदा" (हिन्दी) आज ही मेम्बर बनिये और साथियों को भी बनाईये।

प्रति मैगज़ीन: 40/रुपये सालाना: 200/रुपये रजिस्टर्ड डाक से: 300/रुपये

मुख्य संपादक: मंज़र सादिक जैदी | संपादक: तसदीक हुसैन रिज़वी  
सहायक: कुमैल असगर जैदी, अली अमीर रिज़वी

**Huda Mission**

Office : Shafaat Market  
Zehra Colony, Muftiganj, Lucknow

**هدی مشن**

آفس: شفاعت مارکیٹ زہرا کالونی، مفتی گنج لکھنؤ

Mob: +91-9415090034, 9451085885, 9389830801, 9936193817



اَللّٰهُمَّ عَلٰیْكُمْ

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ طُوبٰى لَّهُمْ وَحَسُنَ مَاۢ بَ (عدد: ۲۹)



ماہیک پٹریکا  
مئی، 2017 جیلد-7، شمارہ-6

یادگار:

مولانا موہممد اعلیٰ آسیف تابا سراہ

ایڈیٹوریل بورڈ:

مولانا تاسدیق ہوسین ساہب، مولانا سرفدول حسن ساہب

مولانا کومیل اسگر ساہب

ایڈیٹر:

سبھد مَنجَر سادیک جِدی

سب ایڈیٹر:

سبھد مو0 سبھن باکری

آرٹ اینڈ ڈیزائن:

imagine  
We Fix Imagination  
9839099435

Annual Subscription  
only Rs. 300/-

Published by:

**Huda Mission**

Head Off.: Vill. Ghazipur, P.O. Gogwan,  
Distt. Muzaffarnagar, U.P. India

Lucknow Office: Shafaat Market  
Zahra Colony, Muftiganj, Lucknow-3 (U.P.) INDIA  
Mob.: 9415090034, 9451085885

E-mail: tubamonthly@gmail.com

فہرست

1. جنت کی سبھی
2. کورانی کھیج
3. چالیسواں سبھ
4. مہربان دل
5. نورانی چہرا
6. ناہب کی تلالا
7. انتہار
8. راج کی باا
9. شاید گوناہ ماہ ہو چاا!



## हज़रत रसूल अकरम स०व० फ़रमाते हैं।

बेशक हमसे कायम वही है जो महदी है।

क्यामत नहीं होगी जब तक इमाम मेहंदी अ०स० का जुहूर न हो जाए।

मेहंदी अ०स० मेरी औलाद से हैं उनका चेहरा चौदहवीं रात के चाँद के मानिन्द रौशन होगा।

खुश किसमत हैं वह लोग जो मेरे अहलेबैत अ०स० से कायम के ज़माने को पायेंगे।

खुश किसमत होगा वह शख्स जो महदी अ०स० से मुलाकात करेगा।

जिस किसी ने इमाम महदी अ०स० की पैरवी की वह नजात पा गया और जिसने उनका साथ न दिया तो वह शख्स हलाक हो गया।



E-mail: tubamonthly@gmail.com

1. "उस दिन वह अपनी ख़बरें बयान करेंगे" किस सूरे की कौन सी आयत का तर्जुमा है?  
☐ (1) सूरा ज़िल्ज़ाल चौथी आयत      ☐ (2) सूरा नास पहली आयत  
☐ (3) सूरा मसद दूसरी आयत      ☐ (4) सूरा इज़्लास पहली आयत
2. "शबे कद्र" का ज़िक्र किस सूरे में आया है?  
☐ (1) सूरा फ़लक      ☐ (2) सूरा तीन      ☐ (3) सूरा नस्र      ☐ (4) सूरा कद्र
3. कुर्आन में खुदा वन्दे आलम ने किस सूरे की पहली आयत में "तेज़ रफ़्तार घोड़ों" की क़सम खायी है?  
☐ (1) सूरा फ़लक      ☐ (2) सूरा आदियात      ☐ (3) सूरा नास      ☐ (4) सूरा नस्र
4. "उस में मलाएका और रुहुलकुदस खुदा की इजाज़त से तमाम उमूर को लेकर नाज़िल होते हैं" किस सूरे की कौन सी आयत का तर्जुमा है?  
☐ (1) सूरा कद्र चौथी आयत      ☐ (2) सूरा नास दूसरी आयत  
☐ (3) सूरा मस्र दूसरी आयत      ☐ (4) सूरा इज़्लास तीसरी आयत
5. सूरा "अलक़" कुर्आन का कौन सा सूरा है?  
☐ (1) 95      ☐ (2) 110      ☐ (3) 96      ☐ (4) 102
6. सूरा "क़ारेअ" कुर्आन का कौन सूरा है और इस में कितनी आयतें हैं?  
☐ (1) 115,5      ☐ (2) 110,3  
☐ (3) 101,11      ☐ (4) 108,3
7. कुर्आन के किस सूरे में "हाथी वालों" का ज़िक्र है? कि जिन्होंने काबे पर हमला किया।  
☐ (1) सूरा ज़िल्ज़ाद      ☐ (2) सूरा लैल  
☐ (3) सूरा फ़लक      ☐ (4) सूरा कद्र
8. "क्या तुम जहन्नम को ज़रूर देखोगे" किस सूरे की किस नम्बर की आयत है?  
☐ (1) सूरा तकासुर,6      ☐ (2) सूरा लैल,7  
☐ (3) सूरा हमज़ा,8      ☐ (4) सूरा क़ुरैश,4





سامنے والی تصویر کو دیکھ کر رنگ ماری



6



قبلہ

قبلا

فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ

بقرة: ۱۴۴

144-بقرہ

آية

آپ اپنا چہرہ مسجد الحرام کی طرف موڑ دیجئے

آپ اپنا چہرہ مسجد الحرام کی طرف موڑ دیجئے

ترجمہ

ترجمہ



7





# मेहरबान दिल

एक दिन इमाम जैनुल आबेदीन अ० मदीने के एक महल से गुज़र रहे थे। वह अकेले और पैदल थे। वहाँ रास्ते में जुज़ाम की बीमारी में गिरफ़्तार कुछ लोग बैठे हुए थे। (जुज़ाम की बीमारी में गिरफ़्तार लोगों का शरीर गलने लगता है) वह लोग बहुत ग़रीब थे। कोई उन पर ध्यान नहीं देता था। जो कोई वहाँ से गुज़रता वह उन लोगों से दूरी बना कर गुज़रता और उन्हें देख कर उनका मज़ाक़ उड़ाता। वह लोग बहुत दुखी रहते थे, इसीलिए यहाँ पर एक-दूसरे के साथ इकट्ठा हुए थे। उनके पास खाने के लिए रोटी भी नहीं होती थी। लोग उनसे दूर रहते थे और न ही उनके साथ खाना खाते थे। लोग कहते थे कि “जुज़ाम एक ख़तरनाक और फैलने वाली बीमारी है। हमें इन लोगों को अपने आप से दूर करना होगा जिससे

कि यह लोग जल्दी मर जाएं और इनकी बीमारी जड़ से ख़त्म हो जाए।”

इमाम सज्जाद अ० चलते हुए उन लोगों के पास पहुँचे। जैसे ही इमाम की नज़र उन लोगों पर पड़ी, इमाम कुछ सोचने लगे। वह लोग भी अपनी दुखभरी आँखों से इमाम को देख रहे थे। इमाम सज्जाद अ० उन लोगों के पास रुक गए और दिल ही दिल में कहने लगे कि “खुदा घमण्ड करने वालों को पसन्द नहीं करता।”

इमाम सज्जाद अ० ने उन लोगों को सलाम किया और सुकून के साथ उनके पास बैठ गए। वह सब बहुत खुश हुए और इमाम अ० के पास इकट्ठा हो गए। वह हैरत और खुशी से इमाम अ० के चेहरे को देख रहे थे। उन्हें यकीन नहीं आ रहा था कि कोई शख्स उनके पास आकर बैठेगा और उनके साथ बात करेगा।



इमाम सज्जाद अ० ने फ़रमाया कि “आज मेरा रोज़ा है!”

इमाम अ० कुछ देर उन लोगों के पास बैठे, बात-चीत की और फिर लोगों को अपने घर आने की दावत दी। उन लोगों को बड़ी हैरत हुई, क्योंकि उनकी बीमारी की वजह से लोग न उनसे बातें करते थे और न ही उनके साथ खाते-पीते थे।

बहरहाल वह इमाम अ० की दावत पर बहुत खुशी के साथ इमाम सज्जाद अ० के घर पहुँच गए। इमाम अ० ने हुक्म दिया था कि उन लोगों के लिए बहुत अच्छा और ज़्यादा तादाद में खाना तैयार किया जाए। खाना तैयार हुआ तो जुज़ाम के मरीज़ों के सामने पेश किया गया। उन लोगों ने खुश होकर खाना खाया। शायद बड़े दिनों के बाद उन्होंने इतना मज़ेदार खाना खाया था, जो इतनी मुहब्बत के साथ उन लोगों के सामने पेश

किया गया था।

कुछ देर बाद इमाम जैनुल आबेदीन अ० ने पैसों से भरी हुई एक थैली मंगाई और उन लोगों के पास बैठ कर हर एक को उसमें से कुछ पैसे दिये। सब लोग हैरत के साथ इमाम अ० को देख रहे थे। इमाम अ० ने उनको तसल्ली दी और उनसे कहा कि आइन्दा भी आया करें।

जब दूसरे लोगों ने इन जुज़ाम के मरीज़ों को इमाम सज्जाद अ० के घर जाते देखा तो कहने लगे कि “इमाम सज्जाद अ० ने कैसे जुज़ाम के मरीज़ों को अपने घर पर बुलाया क्या वह इसके अंजाम से नहीं डरते। क्या वह नहीं जानते कि यह लोग मुर्दा और बेफ़ायदा हैं?”

लेकिन इमाम सज्जाद अ० कुछ और ही सोच रहे थे। वह उन जुज़ाम के मरीज़ों के दुखी दिलों के बारे में सोच रहे थे। जो ग़म से भरे हुए थे।



## हुदा मिशन

### मेम्बर शिप फार्म

तूबा (माहनामा) 300/-

मिस्बाहुल हुदा (हिन्दी) 200/-

मिस्बाहुल हुदा (उर्दू) 200/-

Name: Mr./Mrs./Miss

Father/Husband's Name:

Address:

City/Vill.:  Post :

Distt.:  State:

Pin:  Mobile No:

Phone  e-mail:

मौजूदा सब्सक्राइबर्स अपनी कस्टमर ID लिखें:  Date ..... Signature.....

हुदा मिशन, शिफ़ाअत मार्केट, ज़हरा कालोनी, मुफ़्तीगंज, लखनऊ-3 (इण्डिया)

फ़ोन : 9415090034, 9451085885, 9335881838, 8726254727

इस आर्डर फार्म की कॉपी भेजी जाने वाली रक़म के साथ भेजें।





# नूरानी चेहरा

ग़ैबते कुबरा का सिलसिला शुरू होने के बाद अली इब्ने महज़ियार हर हज पर जाते थे। वह हज के दिनों की शुरुआत में ही मक्का पहुँच जाते और फिर वहाँ से निकलने वाले आखिरी लोगों में से होते।

वह इसलिए ऐसा करते क्योंकि उन्होंने आलिमों से यह बात सुनी थी कि इमाम ज़माना अ0 हज के दौरान अराफ़ात तशरीफ़ लाते हैं।

वह बीस साल तक इमाम अ0 की ज़ियारत की तमन्ना में हज पर जाते रहे लेकिन अपने महबूब की ज़ियारत की तौफ़ीक़ न पा सके। जिसकी वजह से वह मायूस हो गये और दिल में कहा कि इस साल हज पर नहीं जाऊंगा।

हज का ज़माना शुरू होने के करीब था कि उन्होंने ख़वाब के आलम में यह आवाज़ सुनी कि इस मर्तबा हज पर जाओ तुम्हें तुम्हारी मुराद हासिल हो जाएगी। ख़वाब के बाद वह सफ़र के लिए निकले और मक्का आ गए।

एक रात जब वह तवाफ़ कर रहे थे तो उन्होंने एक ख़ुबसूरत जवान को देखा जिसका चेहरा नूर से चमक रहा था। वह इब्ने महज़ियार के पास आये, उन्हें गले लगाया और पूछा कि तुम कहाँ से आए हो?

इब्ने महज़ियार ने कहा: अहवाज़ से आया हूँ।

जवान ने इब्ने महज़ियार से लोगों की हालत पूछी और कहा: इब्ने महज़ियार का



क्या हाल है ?

इब्ने महज़ियार ने कहा: मैं ही इब्ने महज़ियार हूँ।

जवान ने कहा: क्या इमाम हसन असकरी अ0 की अमानत तुम्हारे पास मौजूद है?

इब्ने महज़ियार ने कहा : जी हाँ! और फिर हज़रत की दी हुई अंगुशतरी उतार कर जवान को दिखाई।

उसने अंगुशतरी को बोसा दिया और रोने लगा और फिर कहा : खुदा तुम्हें कामयाबी दे यहाँ क्यों आए हो?

इब्ने महज़ियार ने कहा : ऐ जवान! मैं बीस साल से यहाँ आ रहा हूँ और मेरी बस एक ही तमन्ना है कि पर्दे ग़ैबत में पोशीदा इमाम अ0 की ज़ियारत का शरफ़ हासिल करूँ।

जवान ने कहा: इमाम अ0 पोशीदा नहीं हैं, तुम अपने गुनाहों की वजह से इमाम अ0 के दीदार से महरूम हो। फिर कहा : मुझे इजाज़त मिल चुकी है कि मैं तुम्हें इमाम अ0 की ख़िदमत में ले जाऊँ। जब रात के वक़्त आसमान पर सितारे दिखने लगे तो तुम जबल सफ़ा के करीब आ जाना, मैं तुम्हें इमाम अ0 की ख़िदमत में ले जाऊंगा।

तय वक़्त पर इब्ने महज़ियार वहाँ पहुँचे तो वह जवान मौजूद था। दोनों अपनी-अपनी सवारियों पर सवार होकर चल पड़े। कुछ देर बाद जवान ने कहा : यह नमाज़े शब का वक़्त है। आओ हम दोनों नमाज़ पढ़ लें। नमाज़ शब पढ़ने के कुछ देर बाद जवान ने कहा : आओ सुबह की नमाज़

पढ़ लें। इसके बाद फिर उन्होंने सफ़र शुरू किया।

कुछ देर बाद एक ऐसी वादी में पहुँचे जहाँ एक ख़ैमा लगा था। उस ख़ैमे से नूर की किरणें फूट कर आसमान तक जा रही थीं।

जवान ने कहा : ऐ इब्ने महज़ियार! अपनी सवारी से उतरो और इसे यहीं छोड़ दो। यह कहीं नहीं जाएगी। यह वादिये अमान हैं।

इब्ने महज़ियार घोड़े से उतरे और कुछ देर चलते रहे। जवान ने उनसे कहा : अब आप रुक जाएं ताकि मैं आपके लिए इजाज़त हासिल कर लूँ।

इब्ने महज़ियार रुक गए। कुछ देर बाद जवान वापिस आया और कहा : मुबारक हो, तुम्हें इजाज़त मिल गई है।

इब्ने महज़ियार ने ख़ैमे का पर्दा उठाया तो अन्दर इमाम अ0 का नूर इतना ज़्यादा था कि इब्ने महज़ियार बेहोश होने के करीब हो गए। फिर उन्होंने हवास जमा किया और हज़रत को सलाम किया। इमाम अ0 ने उनसे इराक़ के शीओं का हाल पूछा। इब्ने महज़ियार ने जवाब दिया।

इमाम ज़माना अ0 ने फ़रमाया : मैं लोगों के शोर व गुल से दूर गर्दे नवा में रहता हूँ।

इब्ने महज़ियार के पास सोने से भरी हुई एक थैली थी। उसने वह थैली तोहफ़े के तौर पर इमाम अ0 की ख़िदमत में पेश की लेकिन आप अ0 ने यह कह कर उसे कुबूल नहीं किया कि तुम इसे अपने पास रखो, बहुत जल्द ही तुम्हें इसकी ज़रूरत महसूस होगी।







## नायब की तलाश

अहमद दैनवरी कहते हैं : इमाम हसन असकरी अ0 की रेहलत के दो साल बाद हज के लिए मैं अरदबील से चला और दैनवर पहुँच गया लोग इमाम हसन असकरी अ0 के नायब के सिलसिले में हैरान व परेशान थे दैनवर के लोग मेरे आने से खुश हुए। वहाँ के शीओं ने 13हज़ार सहम इमाम अ0 मुझे दिए कि मैं सामरा जाकर इमाम के जानशीन के सुपूर्द कर दूँ। मैंने कहा कि इमाम अ0 के जानशीन को अभी मैं भी नहीं जानता हूँ। वह कहने लगे: हमें आप पर ऐतबार है जब भी आपको इमाम अ0 का जानशीन मिले आप उनके सुपूर्द कर दीजियेगा। मैंने उनसे दीनार लिये और वहाँ से चला आया। किरमानशाह में अहमद बिन हसन से मुलाकात हुई उसने भी एक हज़ार दिरहम और कुछ थैले कपड़े मुझे दिए कि इन्हें इमाम अ0 के नायब तक पहुँचा दूँ।

मैं बग़दाद में नायब इमाम अ0 की तलाश में था। मुझे बताया गया कि 3 लोग नियाबत का दावा कर रहे हैं। इनमें एक का नाम बक़्तानी था। मैं उसके पास गया और उससे दलील माँगी लेकिन उसके पास कोई ऐसी चीज़ नहीं थी जो मुझे मुतमईन करती। फिर मैं इस्हाक़ अहमर नाम के एक शख्स के पास गया वह भी मेरे लिए सच्चा साबित न हो सका। उस्मान इब्ने सईद अमरी नाम के तीसरे आदमी के पास गया। हाल-चाल पूछने के बाद उनसे कहा कि लोगों का कुछ माल मेरे पास है और उन्हें इमाम हसन असकरी अ0 के नायब तक पहुँचाना ज़रूरी है। बड़ा फ़िक्रमंद हूँ और समझ में नहीं आता कि क्या करूँ। उसने कहा कि सामरा

जाओ वहाँ इब्ने रज़ा (इमाम असकरी अ0) के घर जाओ तुम्हें इमाम का वकील मिल जाएगा।

मैं सामरा गया और इमाम के घर में इमाम के वकील के बारे में पूछा। दरबान ने कहा ज़रा इन्तेज़ार करो अभी बाहर आते होंगे। कुछ देर बाद एक शख्स आया उसने मेरा हाथ थामा और घर के अन्दर ले गया। हाल-चाल पूछने के बाद मैंने उससे कहा: जबल की तरफ़ से मैं कुछ माल लेकर आया हूँ और दलील व शाहिद की तलाश में हूँ। मैं मजबूर हूँ कि जिस शख्स से नियाबत के सिलसिले में दलील हासिल हो उसी को यह माल दूँ। उस वक़्त मेरे लिए खाना लाया गया। उसने कहा कि खाना खा लो और कुछ देर आराम कर लो फिर तुम्हारा काम भी देख लिया जाएगा।

कुछ रात गुज़रने के बाद उस शख्स ने मुझे एक ख़त लाकर दिया जिसमें लिखा था कि: अहमद बिन मुहम्मद दैनवरी आया हुआ है और इतनी मिक्दार में रक़म, थैली और थैले लाया है और थैली में इतनी रक़म है और उसकी तमाम खुसुसियतें बयान कर दी थीं। मसलन लिखा था कि फ़लों ज़िरा साज़ की बेटे की थैली में इतनी रक़म है। किरमान से एक थैली फ़लों शख्स की है और फ़लों थैला अहमद इब्ने इदरीस मादरानी का है जिसका भाई ऊन बेचता है वगैरह।

इस ख़त के ज़रिये मेरा शक़ व शुब्हा ख़त्म हो गया और इतमेनान हो गया कि उसमान इब्ने सईद ही इमाम के नायब हैं। इमाम अ0 ने इस ख़त में मुझे हुक्म दिया था कि इस माल को बग़दाद ले जाऊँ और उसी के सुपूर्द कर दूँ जिससे मुलाकात हुई थी।



## इन्तेज़ार

जब से इमामे ज़माना लोगों की नज़रों से ग़ायब हुए हैं, तबही से बहुत से मुसलमानों के ज़ेहन में यह सवाल पैदा होता है कि अब हमारी क्या ज़िम्मेदारियाँ हैं? इन हालात में हम लोग इमाम अ0 को क़रीब से नहीं देख सकते और न आपसे अपने सवालात पूछ सकते हैं तो हमें क्या करना चाहिए? हमें कब तक इमाम अ0 के इन्तेज़ार में सन्न करना चाहिए?

मोमिन की इस हालत को इन्तेज़ारे फ़र्ज कहते हैं यानी इमामे ज़माना अ0 के जुहूर का इन्तेज़ार करना, ऐसे इमाम अ0 का इन्तेज़ार करना जो रसूल और आइम्माए मासूमीन के फ़रमान के मुताबिक़ एक दिन जुहूर फ़रमाएंगे और इस ज़मीन को अदल व इंसफ़ से भर देंगे।

इन्तेज़ारे फ़र्ज यानी इमामे ज़माना अ0 की इमामत पर पूरा यकीन। यह अक़ीदा और यकीन तौहीद, रेसालत और इमामत और तमाम बाक़ी इस्लामी अक़ाएद को अपने अन्दर समेटे हुए है। इमाम महदी अ0 की इमामत पर ईमान रखना, विलायत पर ईमान की अलामत है। यही ईमान तमाम अमाल के कुबूल होने की शर्त है।

इमाम सादिक़ अ0 ने फ़रमाया: “इस्लाम के

पाँच बुनियादी खम्भे हैं नमाज़, ज़कात, हज, रोज़ा और विलायत। जिस तरह विलायत के इक़रार के लिए ताकीद की गई है उसी तरह किसी और चीज़ पर ज़ोर नहीं दिया गया है मगर बहुत से लोग इस्लाम के चार बुनियादी उसूल को तो कुबूल करते हैं मगर विलायत को कुबूल नहीं करते। खुदा की क़सम अगर कोई शख्स सारी रात इबादत व नमाज़ में गुज़ारे और दिन में रोज़े रखे मगर विलायत को कुबूल न करे और इसी हालत में मर जाए तो उसकी नमाज़ व रोज़ा और इबादत कुबूल नहीं होगी।

पैग़म्बरे अकरम स0 की दूसरी हदीस में बयान हुआ है कि इमाम के जुहूर का इन्तेज़ार इबादत है। मेरी उम्मत का बेहतरीन अमल, खुदा से इमाम के जुहूर की दुआ करना है। इसी तरह मौला अली अ0 से रवायत है कि “सबसे बड़ी इबादत ख़ामोशी और जुहूर का इन्तेज़ार है।”

इमाम के जुहूर का इन्तेज़ार करना ग़ैब पर ईमान रखना है और ग़ैब पर ईमान इंसान को नेक अमल की तरगीब देता है और उसको सही अक़ीदे पर बाक़ी रहने की ताक़त अता करता है।





# राज़ की बात

बरसों पहले की बात है कि जंगल में एक चूहा रहता था उसके बिल के करीब ही अखरोट का एक बड़ा पेड़ था जब अखरोट पकते तो चूहा बहुत खुश होता क्योंकि हवा से पक्के हुए अखरोट चूहे के बिल के बिलकुल आस पास गिरते थे और वह मजे ले ले कर अखरोट कुतरता और खा जाता एक मर्तबा उसने सोचा कि अगर मैं अखरोटों को जमा कर लूँ तो साल भर उनके मजे ले सकता हूँ वह किसी महफूज़ जंगल की तलाश में इधर उधर फिरने लगा उसके बिल में बहुत जगह थी मगर जब बारिश ज़ियादा होती तो पानी उसके बिल में भर जाता था वह एक सूखे हुये पेड़ के पास पहुँचा पेड़ में उसे सुराख नज़र आया उसने अन्दर झाँका तो खुशी से उछल पड़ा वह पेड़ अन्दर से खोखला था चूहे ने सोचा कि अखरोट जमा करने की इससे महफूज़ जंगल और कोई नहीं हो सकती अब वह अखरोट लाकर उस खोल में रखता जाता एक ही दिन में उसने अखरोटों से खोल को भर दिया वह अपने उस ज़खीरे से बेहद खुश था वह हर रोज़ वहाँ जाता और एक दो अखरोट कुतर के खाता चूहा अपने उस खज़ाने से मुतमईन था उसे सरदियों की कोई फिक्र न थी।

एक दिन वह अपने बिल के बाहर बैठा हुआ

था कि उसे एक गिलहरी नज़र आयी चूहे ने गिलहरी को बुलाया और उसे बताया कि मैंने पेड़ की खोल में अखरोटों का एक ज़खीरा छुपाया हुआ है यह राज़ की बात है और मैं सिर्फ़ तुमको बता रहा हूँ।

गिलहरी उसकी बात सुनकर हैरान हुई थोड़ी देर बाद फुदकती हुई एक पेड़ पर चढ़ गयी पेड़ की चोटी पर एक बुलबुल बैठी गीत गा रही थी गिलहरी को चूहे की वह बात याद आयी उसने बुलबुल को बुलाकर कहा तुम मेरे पास आओ मैं तुम्हें एक राज़ की बात बताती हूँ।

बुलबुल उड़कर गिलहरी के बिलकुल करीब आकर शाख़ पर बैठ गयी अब गिलहरी ने उसे सारी बात बतायी और यह भी कहा यह राज़ की बात है मैं सिर्फ़ तुम्हें बता रही हूँ बुलबुल भी यह बात सुनकर बहुत हैरान हुयी वह दोबारा गीत गाने लगी फिर वह उड़ती हुयी एक खेत के ऊपर से गुज़री खेत में एक खरगोश घास खाने में मसरुफ़ था बुलबुल खरगोश के करीब जाकर बैठी और उसे मुखातिब करते हुए कहा मेरे पास एक राज़ की बात है अगर तुम सुनना चाहो तो ज़रा ग़ौर से सुनो।

खरगोश उछल कर बुलबुल के पास पहुँच

गया बुलबुल ने बड़ी राज़दारी से खरगोश को बताया किसी ने खोल वाले पेड़ में अखरोट जमा किये हुए हैं यह राज़ की बात है और मैं सिर्फ़ तुम्हें बता रही हूँ खरगोश ने हैरानी से अपने बड़े बड़े कानों को दाएं बाएं घुमाया और घास खाने लगा जब उसका पेट भर गया तो वह उछलता कूदता अपने घर की तरफ़ रवाना हुआ रास्ते में उसे एक साही मिला खरगोश ने साही से कहा मेरे पास एक राज़ की बात है अगर तुम किसी को न बताओ तो मैं तुम्हें बताने को तय्यार हूँ साही ने कहा ठीक है मैं तुम्हारी बात मानता हूँ अब तुम हमें वह राज़ की बात बताओ?

खरगोश ने कहा वह बड़े पेड़ के करीब जो सूखा हुआ पेड़ है उसके खोल में किसी ने अखरोट जमा किये हुए हैं साही ने यह सुनकर हैरत से अपने छोटे से सर को हिलाया और अपने नोकीले कांटों के अन्दर छिपा लिया खरगोश लम्बी लम्बी छलांगें लगाता हुआ अपने घर पहुँचा साही अपनी खुराक की तलाश में फिरने लगा उसे जल्द ही अपनी मजेदार गिज़ा की बेल नज़र आ गयी साही को यह मीठी मीठी जड़ें बहुत पसन्द थीं वह जड़ें निकालने के लिये ज़मीन खोदने लगा इतने में उसे एक फ़ाख़ता की आवाज़ सुनाई दी साही ने अपनी छोटी सी गर्दन अकड़ा कर देखा तो करीब ही शिशम के पेड़ पर बैठी फ़ाख़ता उसे नज़र आ गयी उसने अपने गले से मखसूस खरखराहट की आवाज़ निकाल कर फ़ाख़ता को अपने पास बुलाया साही ने फ़ाख़ता से कहा मैंने एक राज़ की बात सुनी है अगर तुम पसन्द करो तो मैं तुम्हें बताऊँ?

फ़ाख़ता ने हाँ में अपनी गर्दन हिलाई साही ने कहा बड़े खेत के किनारे जो सूखा हुआ पेड़ है उसकी खोल में किसी ने अखरोट जमा कर रखे हैं।

फ़ाख़ता के लिये यह दिलचस्प बात थी वह थोड़ी देर बाद दाना चुगने के लिये उड़ती हुयी उस बड़े खेत में पहुँची कि जिसके किनारे पर सूखा हुआ पेड़ था उसे एक छोटा सा चूहा नज़र आया जो कि अपना बिल खोदने में मसरुफ़ था फ़ाख़ता उसके करीब पहुँची और कहा मेरे पास एक बड़े मजे की बात है अगर तुम किसी को न बताओ तो मैं तुम्हें बताऊँगी।

चूहा ज़मीन खोदने का काम छोड़कर फ़ाख़ता के करीब आकर बैठा और कहने लगा मुझे तुम वह बात बताओ मैं किसी को भी नहीं बताऊँगा फ़ाख़ता ने सूखे हुए पेड़ की तरफ़ इशारा करते हुए कहा इसके खोखले तने में किसी ने अखरोट छिपा रखे हैं।

अखरोटों का नाम सुनकर छोटे चूहे के मुँह में पानी भर आया वह अखरोट कुतरने में बहुत लुप्त महसूस करता था थोड़ी देर बाद जब फ़ाख़ता वहाँ से उड़कर चली गयी तो छोटे चूहे ने सोचा कि क्यों न मैं जाकर फ़ाख़ता की बात की खोज कर लूँ फिर वह सूखे हुए पेड़ के पास पहुँचा उसे तने में एक सुराख़ नज़र आया उसने सुराख़ में झाँक कर देखा तो वाकई खोल के अन्दर अखरोटों का एक ढेर महफूज़ था उसने जल्दी से एक अखरोट निकाला उसे कुतरा और उसे मजे ले ले कर खाने लगा अचानक उसके ज़ेहन में एक ज़बरदस्त तरकीब आयी क्यों न मैं यह सारे अखरोट निकालकर अपने बिल में ले जाऊँ वह एक एक अखरोट निकाल कर अपने बिल में ले गया वह सारा दिन अखरोट अपने घर में रखने में लगा रहा इसी शाम बड़े चूहे के घर इत्तेफ़ाक से गिलहरी, बुलबुल, खरगोश, साही और फ़ाख़ता जमा हो गये अब उनमें से हर एक ने चूहे को बताया कि सूखे पेड़ के खोखले तने में किसी ने अखरोट छिपा रखे हैं यह कितने मजेदार राज़ की बात है चूहे ने हैरानी से पूछा तुम सबको यह बात कैसे मालूम हुयी? यह तो मेरा राज़ है अच्छा अगर तुम्हें पता चल ही गया है तो कोई बात नहीं आओ मैं तुम्हें वह ज़खीरा दिखाता हूँ।

सब जानवर सूखे पेड़ के पास पहुँचे और सुराख़ में से पेड़ की खोल में झाँका मगर वहाँ तो कोई अखरोट मौजूद न था सब बहुत हैरान हुए अब चूहा बहुत अफसोस करने लगा उसने सोचा कि अगर मैं अपने राज़ को सिर्फ़ खुद तक रखता तो मेरे अखरोट इस तरह कोई चुराकर नहीं ले जा सकता था दूसरी तरफ़ छोटा चूहा अपने बिल में अखरोट कुतरने में मसरुफ़ था उसे अब सरदियों की कोई फिक्र न थी।





# شاید گناہ ماف ہو जाए!

وہ آدمی رُک گیا تاکہ کُچھ سانس لے سکے۔  
فیر اپنی پُرا نی ابا کے کونے سے اپنے چہرے کا  
پسینا سا ف کیا اور دوبارا چل پڑا۔ اُسکے پیر  
اُسکا سا تھ نہی دے رھے تھے۔ ہر کدم اُٹانے پر دُرد  
کی اک تہج لھر اُسکے پورے بدن مں دؤڈ جاتی۔  
اخرکار وہ پُغمبرے اکر م س0و0 کے ر کے آگے  
رُک گیا اور ہا تھ اُٹا کر دروازے پر دستک دی۔

اللہ کے رسُول س0و0 اپنے ر کے اندر کُچھ  
مسلمانوں کے سا تھ خانا رھے تھے۔ دروازے پر دستک  
کی آوا ج سُن کر آپ س0و0 اُٹے اور کُچھ دیر با د  
بُڑے اور بیمار شُخس کے سا تھ کمرے مں آ گئے۔ وہ شُخس  
جُمین پر بٹ نہی سکتا تھا۔ اللہ کے رسُول س0و0  
نے اُسے اپنے جَانُ پر بٹایا اور خانے کی پلے آگے  
بڈا کر کہا کہ ”خانا رھا لو!“

سارے مہمان ہُجُور کے اِس برتاو سے ہیرت مں تھے،  
لکین اُس داوت مں اک امیر آدمی بھی مَؤجُود تھا۔  
وہ اِس بیمار بُڑے کو نپسندی کی نیگاہ سے دیکھنے  
لگا۔ اُسکے چہرے اور کپڑوں کی ہالیت دیکھ کر  
اُسے بُھُت بُرا لگ رھا تھا۔ اُس نے بُڑے کو اپنے دِل  
مں ”بُھُت بُرا“—بلا کہا اور خانا آڈا اُڈ کر  
دسترخان سے اُٹ کر اپنے ر کے چلا گیا۔ دُسرے  
لُگ اُس آدمی کے اِس برتاو کو دیکھ کر ناراج  
ہو گئے۔

رات ہو رھی تھی۔ امیر آدمی کو نی د نہی آ

رھی تھی۔ اُسکا چہرا پسینے سے بھیگا تھا اور پُرا  
جِرم بُخار کی و جھ سے جَل رھا تھا۔ اُسکے رُٹنے  
مں بُھُن دُرد ہو رھا تھا۔ کافی دیر کر وٹے بدلنے کے  
با د اُخیرکار اُسے نی د آ گئی۔ سُبھ کے وُکُت  
اُسکی بیوی نے اُسے آوا ج دی اور کہا کہ ”اُٹو  
نما ج کا وُکُت ہو گیا ہے!“

اُس نے اپنی آؤخے خول دیں، لکین اُس سے اُٹا  
نہی جا رھا تھا۔ کافی مہنات کے با د وہ اُٹ کر بٹ  
گیا۔ اُس نے اپنی جگہ سے اُٹنا چاہا لکین اُسکے  
پیر ہِل نہی رھے تھے۔ وہ اپنے پیروں کو دبانے لگا تاکہ  
رُخُن نرسوں مں دؤڈنے لگ جائے۔ لکین یہ کام بے فایدا  
تھا۔ اُخیر اُسکی بیوی نے پُچھا کہ ”کُیا ہُا ہے؟ اپنے  
پیر کُی دبا رھے ہو؟ اُٹ کُی نہی رھے؟“

امیر آدمی نے پریشانی سے مری آوا ج مں کہا  
کہ ”پتا نہی کُی اُٹ نہی پا رھا!“

اُسی وُکُت اُسے کُچھ دین پہلے کا کِرسا یا د  
آیا جب پُغمبر س0و0 کے ر پر بُڑے بیمار کو  
دیکھ کر اُس نے نپسندی کا اِجڑا ر کیا تھا اور  
اپنے دِل مں اُسے بُرا بلا کہا تھا..... اور اب وہ  
خُود اِس بیماری مں گیر فُتار ہو چکا تھا۔

امیر آدمی نے اپنے دِل مں کہا کہ ”کا ش!  
مں فیر سے اُس شُخس کو دیکھ سکتا اور اُس سے  
ما فی مَؤ گ لےتا۔ شاید اِسی ترہ سے خُودا مے ر گناہ  
کو برُخا دے۔“



## لطیفے

عثمان: عدنان! تمہیں کونسا جانور پسند ہے؟

عدنان: جی بلی۔

عثمان: آخر بلی ہی کیوں؟

عدنان: باورچی خانے میں سے دودھ روزانہ میں پی جاتا ہوں۔ برا بھلا بلی کو کہا جاتا ہے۔



ایک باپ نے اپنے بیٹے سے کہا مجھے یاد نہیں تم نے کبھی کوئی ایسا کام کیا ہو جس سے میرا سرا نچا ہوا ہو۔  
بیٹے نے فوراً جواب دیا یاد کیجئے ایک دن میں نے آپ کے سر کے نیچے تین تکیے لگا دیئے تھے۔



ماں (منے سے) بیٹا گنداپانی نہ پیو

منا: لیکن ماں میں تو صابن سے دھو کر پی رہا ہوں۔



بیٹا (باپ سے) ابا جان لیموں کے درخت سے لیموں کب حاصل ہوں گے؟

باپ: صبر کرو بیٹا صبر کا پھل میٹھا ہوتا ہے۔

بیٹا: پر ابا جان لیموں تو کھٹے ہوتے ہیں نا!



ایک چیونٹی بھاگی بھاگی جا رہی تھی۔ راستے میں ایک چوہا ملا۔

چوہا بولا: بی چیونٹی، کہاں جا رہی ہو؟

چیونٹی نے جواب دیا: بھائی چوہے، ہاتھی کا حادثہ ہو گیا ہے،  
اسے خون دینے جا رہی ہوں۔



# راز کی بات

برسوں پہلے کی بات ہے کہ جنگل میں ایک چوہا رہتا تھا۔ اس کے بل کے قریب ہی اخروٹ کا ایک بڑا درخت تھا۔ جب اخروٹ پکتے تو چوہا بہت خوش ہوتا، کیوں کہ ہوا سے پکے ہوئے اخروٹ چوہے کے بل کے بالکل آس پاس گرتے تھے اور وہ مزے لے لے کر اخروٹ کترتا اور گری نکال کر کھا جاتا۔ ایک مرتبہ اس نے سوچا کہ اگر میں اخروٹوں کو جمع کر لوں تو سال بھر ان کو مزے سے کھا سکتا ہوں۔ وہ کسی محفوظ جگہ کی تلاش میں ادھر ادھر پھرنے لگا۔ اس کے بل میں بہت جگہ تھی، مگر جب بارشیں زیادہ ہوتیں تو پانی اس کے بل میں بھر جاتا تھا۔ وہ ایک سوکھے ہوئے درخت کے پاس پہنچا۔ درخت کے تنے میں اسے سوراخ نظر آیا۔ اس نے اندر جھانکا تو خوشی سے وہ اچھل پڑا۔ وہ درخت اندر سے کھوکھلا تھا۔ چوہے نے سوچا کہ اخروٹ جمع کرنے کی اس سے اچھی جگہ اور کوئی نہیں ہو سکتی۔ اب وہ اخروٹ لاکر اس پیڑ میں رکھتا جاتا۔ ایک ہی دن میں اس نے اخروٹوں سے پیڑ کو بھر دیا۔ وہ اپنے اس ذخیرے سے بے حد خوش تھا۔ وہ ہر روز وہاں جاتا اور ایک آدھ اخروٹ کتر کر کھاتا۔ چوہا اپنے اس خزانے سے مطمئن تھا۔ اسے سردیوں کی کوئی فکر نہ تھی۔

ایک دن وہ اپنے بل کے باہر بیٹھا ہوا تھا کہ اسے ایک گلہری

نظر آئی۔ چوہے نے گلہری کو بلایا اور اسے بتایا کہ میں نے درخت کی کھوہ میں اخروٹوں کا ایک ذخیرہ چھپایا ہوا ہے۔ یہ راز کی بات ہے اور میں صرف تم کو بتا رہا ہوں۔

گلہری اس کی بات سن کر حیران ہوئی۔ تھوڑی دیر بعد بھدکتی ہوئی ایک درخت پر چڑھ گئی۔ درخت کی چوٹی پر ایک بلبل بیٹھی گیت گارہی تھی۔ گلہری کو چوہے کی وہ بات یاد آئی۔ اس نے بلبل کو بلا کر کہا: "تم میرے پاس آؤ، میں تمہیں ایک راز کی بات بتاتی ہوں۔"

بلبل اڑ کر گلہری کے بالکل قریب آکر شاخ پر بیٹھ گئی۔ اب گلہری نے اسے ساری بات بتائی اور یہ بھی کہا: "یہ راز کی بات ہے۔ میں صرف تمہیں بتا رہی ہوں۔" بلبل بھی یہ بات سن کر بہت حیران ہوئی۔ وہ دوبارہ گیت گانے لگی۔ پھر وہ اڑتی ہوئی ایک کھیت کے اوپر سے گزری۔ کھیت میں ایک خرگوش گھاس کھانے میں مصروف تھا۔ بلبل خرگوش کے قریب جا کر بیٹھی اور اسے مخاطب کرتے ہوئے کہا: "میرے پاس ایک راز کی بات ہے۔ اگر تم سننا چاہو تو ذرا غور سے سنو۔"

خرگوش اچھل کر بلبل کے پاس پہنچ گیا۔ بلبل نے بڑی راز داری سے خرگوش کو بتایا: "کسی نے کھوہ والے درخت کے تنے میں اخروٹ ذخیرہ کیے ہوئے ہیں۔ یہ راز کی بات ہے اور میں صرف



تمہیں بتا رہی ہوں۔" خرگوش نے حیرانی سے اپنے بڑے بڑے کانوں کو دائیں بائیں گھمایا اور گھاس کھانے لگا۔ جب اس کا پیٹ بھر گیا تو وہ اچھلتا کودتا اپنے گھر کی طرف روانہ ہوا، راستے میں اسے ایک خار پشت (سہاہی) ملا۔ خرگوش نے خار پشت سے کہا: میرے پاس ایک راز کی بات ہے، اگر تم کسی کو نہ بتاؤ تو میں تمہیں بتانے کو تیار ہوں؟

خار پشت نے کہا: "ٹھیک ہے، میں تمہاری بات مانتا ہوں۔ اب تم مجھے وہ راز کی بات بتاؤ؟"

خرگوش نے کہا: "وہ بڑے درخت کے قریب جو سوکھا ہوا درخت ہے، اس کی کھوہ میں کسی نے اخروٹ جمع کیے ہوئے ہیں۔" خار پشت نے یہ سن کر حیرت سے اپنی چھوٹی سی تھوٹی کو بلایا اور اپنے نوکیلے کانوں والے لباس کے اندر چھپا لیا۔ خرگوش لمبی لمبی چھلانگیں لگاتا ہوا اپنے گھر پہنچا۔ خار پشت اپنی خوراک کی تلاش میں پھرنے لگا۔ اسے جلد ہی اپنی مرغوب غذا کی نیل نظر آ گئی۔ خار پشت کو یہ میٹھی میٹھی جڑیں بہت پسند تھیں۔ وہ جڑیں نکالنے کے لیے زمین کھودنے لگا۔ اتنے میں اسے ایک فاختہ کی آواز سنائی دی۔ خار پشت نے اپنی چھوٹی سی گردن اکڑا کر دیکھا تو قریب ہی شیشم کے درخت پر بیٹھی فاختہ اسے نظر آ گئی۔ اس نے اپنے گلے سے مخصوص خرخراہٹ کی آواز نکال کر فاختہ کو اپنے پاس بلایا۔

خار پشت نے فاختہ سے کہا: "میں نے ایک راز کی بات سنی ہے، اگر تم پسند کرو تو میں تمہیں بتاؤں؟"

فاختہ نے ہاں میں اپنی گردن ہلائی۔ خار پشت نے کہا: "بڑے کھیت کے کنارے جو سوکھا ہوا درخت ہے۔ اس کی کھوہ میں کسی نے اخروٹ جمع کر رکھے ہیں۔"

فاختہ کے لیے یہ دلچسپ اور عجیب بات تھی۔ وہ تھوڑی دیر بعد دانہ چکنے کے لیے اڑتی ہوئی اس بڑے کھیت میں پہنچی کہ جس کے کنارے پر سوکھا ہوا درخت تھا۔ اسے ایک چھوٹا سا چوہا نظر آیا جو کہ اپنا بل کھودنے میں مصروف تھا۔ فاختہ اس کے قریب پہنچی اور کہا: "میرے پاس ایک بڑے مزے کی بات ہے، اگر تم کسی کو نہ بتاؤ تو

میں تمہیں بتاؤں گی۔"

چوہا زمین کھودنے کا کام چھوڑ کر فاختہ کے قریب آ کر بیٹھا اور کہنے لگا: "مجھے تم وہ بات بتاؤ۔ میں کسی کو بھی نہیں بتاؤں گا۔"

فاختہ نے سوکھے ہوئے درخت کی طرف اشارہ کرتے ہوئے کہا: "اس کے کھوکھلے تنے میں کسی نے اخروٹ چھپا رکھے ہیں۔"

اخروٹوں کا نام سن کر چھوٹے چوہے کے منہ میں پانی بھر آیا۔ وہ اخروٹ کترنے میں بہت لطف محسوس کرتا تھا۔ تھوڑی دیر بعد جب فاختہ وہاں سے اڑ کر چلی گئی تو چھوٹے چوہے نے سوچا کہ کیوں نہ میں جا کر فاختہ کی بات کی تصدیق کر لوں۔ اس لئے وہ سوکھے ہوئے

درخت کے پاس پہنچا۔ اسے تنے میں ایک سوراخ نظر آیا۔ اس نے سوراخ میں جھانک کر دیکھا تو واقعی کھوہ کے اندر اخروٹوں کا ایک ڈھیر جمع تھا۔ اس نے جلدی سے ایک اخروٹ نکالا۔ اسے کتر اور اس کی گری مزے لے لے کر کھانے لگا۔ اچانک اس کے ذہن میں ایک زبردست ترکیب آئی۔ اس نے سوچا کہ کیوں نہ میں یہ سارے اخروٹ نکال کر اپنے بل میں لے جاؤں۔ اور وہ ایک ایک اخروٹ نکال کر اپنے بل میں لے گیا۔ وہ سارا دن اخروٹ اپنے گھر منتقل کرنے میں لگا رہا۔ اسی شام بڑے چوہے کے گھر اتفاقاً گلہری، بلبل، خرگوش، خار پشت اور فاختہ جمع ہو گئے۔ اب ان میں سے ہر ایک نے چوہے کو بتایا کہ سوکھے درخت کے کھوکھلے تنے میں کسی نے اخروٹ چھپا رکھے ہیں۔ یہ کیسی مزے دار راز کی بات ہے۔ چوہے نے حیرانی سے پوچھا: "تم سب کو یہ بات کیسے معلوم ہوئی؟ یہ تو میرا راز ہے۔" اچھا اگر تمہیں پتا چل ہی گیا ہے تو کوئی بات نہیں۔ آؤ میں تمہیں وہ ذخیرہ دکھاتا ہوں۔"

سب جانور سوکھے درخت کے پاس پہنچے اور سوراخ میں سے درخت کی کھوہ میں جھانکا، مگر وہاں تو کوئی اخروٹ موجود نہ تھا۔ سب بہت حیران ہوئے۔ اب چوہا بہت افسوس کرنے لگا۔ اس نے سوچا کہ اگر میں اپنے راز کو صرف خود تک رکھتا تو میرے اخروٹ اس طرح کوئی چرا کر نہیں لے جاسکتا تھا۔ دوسری طرف چھوٹا چوہا اپنے بل میں اخروٹ کترنے میں مصروف تھا۔ اسے اب سردیوں کی کوئی فکر نہ تھی۔





# دنیا کی مثال

کاش زیادہ کیوں نہ اٹھائیں۔۔۔  
اور جنھوں نے اٹھائیں ہی نہیں وہ سر پکڑے بیٹھے تھے  
کے کاش ہم نے بھی کچھ کنکریاں اٹھالی ہوتیں۔۔۔  
پیارے بچوں! دنیا میں زندگی کی مثال اس اندھیری  
سرنگ جیسی ہے زندگی وہ اندھیری سرنگ ہے اور نیکی ان  
کنکریوں کی طرح ہیں جو بظاہر مشکل تو لگ رہی ہیں لیکن اس کا  
اجر بہت بڑا ہے۔ اس زندگی میں کی ہوئی نیکی، آخرت میں  
بہرے کی طرح قیمتی ہوگی اور اس وقت انسان چھپتائے گا کہ  
کاش میں نے دو چار مشکلات اور اٹھائی ہوتیں۔۔۔ اے  
کاش۔۔۔ لیکن اس وقت پچھتانے سے کوئی فائدہ نہیں ہوگا۔ جو  
ہمیں کرنا ہے وہ اسی دنیا میں کرنا ہے اگر ہم اس دنیا میں اچھے  
انسان بنیں گے اور نیکیاں کریں گے تو ہم آخرت میں کامیاب  
ہوئے گا اگر ہم اس دنیا میں برے کام کریں گے تو آخرت میں  
پچھتانے کے علاوہ کوئی راستہ نہیں ہوگا۔

ایک دفعہ ایک قافلہ سفر کے دوران ایک اندھیری سرنگ  
سے گزر رہا تھا کہ اچانک ان کہ پیروں میں کنکریوں کی طرح  
کچھ چیزیں چھیں۔۔۔  
کچھ لوگوں نے اس خیال سے وہ کنکریاں سمجھ کر اٹھالیں  
کے ہمارے پاؤں میں لگی ہیں کسی اور کو نہ لگیں اور نیکی کی خاطر  
اٹھا کر جیب میں رکھ لیں۔۔۔  
کچھ لوگوں نے زیادہ اٹھالیں تو کچھ نے کم اور ان  
میں کچھ ایسے بھی تھے کہ جنھوں نے بالکل بھی زحمت نہیں کی  
اٹھانے کی۔۔۔  
جب وہ لوگ سرنگ سے باہر نکلے تو وہ سب یہ دیکھ کر  
حیران تھے کہ جنہیں انھوں نے کنکریاں سمجھ کر اٹھایا وہ تو قیمتی  
بہرے تھے۔۔۔  
جنھوں نے زیادہ اٹھائیں وہ مالا مال ہوئے اور ان کی  
خوشی کی انتہا نہ تھی جنھوں نے کم اٹھائیں وہ پچھتا رہے تھے کہ

# شاید گناہ معاف ہو جائے!

پسینے سے بھیگا تھا اور پورا جسم بخار کی وجہ سے جل رہا تھا۔ اس کے  
گھٹنے میں بھی درد ہو رہا تھا۔ کافی دیر کروٹیں بدلنے کے بعد آخر کار  
اس کو نیند آگئی۔ صبح کے وقت اس کی بیوی نے اسے آواز دی اور کہا  
کہ "اٹھو نماز کا وقت ہو گیا ہے۔"  
اس نے اپنی آنکھیں کھول دیں، لیکن اس سے اٹھانیں جا  
رہا تھا۔ کافی سخت کے بعد وہ اٹھ کر بیٹھ گیا۔ اس نے اپنی جگہ سے  
اٹھنا چاہا لیکن اس کے پاؤں ہل نہیں رہے تھے۔ وہ اپنے پاؤں کو  
دبانے لگا تا کہ خون رگوں میں جاری ہو جائے۔ لیکن یہ کام  
بے فائدہ تھا۔ آخر اس کی بیوی نے پوچھا کہ "کیا ہوا ہے؟ اپنے  
پاؤں کیوں دبا رہے ہو؟ اٹھ کیوں نہیں رہے؟"  
امیر آدمی نے پریشانی سے بھری آواز میں کہا کہ "پتہ نہیں  
کیوں اٹھ نہیں پا رہا۔"  
اسی وقت اسے کچھ دن پہلے کا قصہ یاد آیا جب پیغمبرؐ کے گھر پر  
بوڑھے بیمار کو دیکھ کر اس نے ناپسندی کا اظہار کیا تھا اور اپنے دل میں  
اس برا بھلا کہا تھا۔۔۔ اور اب وہ خود اس بیماری میں گرفتار ہو چکا تھا۔  
امیر آدمی نے اپنے دل میں کہا کہ کاش! میں پھر سے اس شخص کو دیکھ  
سکتا اور اس سے معافی مانگ لیتا۔ شاید اسی طرح سے خدا میرے  
گناہ کو معاف کر دے۔

وہ آدمی رک گیا تا کہ کچھ سانس لے سکے۔ پھر اپنی پرانی عبا  
کے کونے سے اپنے چہرے کا پسینہ صاف کیا اور دوبارہ چل پڑا۔  
اس کے پاؤں اس کا ساتھ نہیں دے رہے تھے۔ ہر قدم اٹھانے پر  
درد کی ایک تیز لہر اسکے پورے بدن میں دوڑ جاتی تھی۔ آخر کار وہ  
پیغمبر اکرمؐ کے گھر کے آگے رک گیا اور ہاتھ اٹھا کر دروازے پر  
دستک دی۔  
اللہ کے رسولؐ اپنے گھر کے اندر کچھ مسلمانوں کے ساتھ  
کھانا کھا رہے تھے۔ دروازے پر دستک کی آواز سن کر آپؐ اٹھے  
اور کچھ دیر بعد بوڑھے اور بیمار شخص کے ساتھ کمرے میں آگئے۔ وہ  
شخص زمین پر بیٹھ نہیں سکتا تھا۔ اللہ کے رسولؐ نے اسے اپنے زانو  
پر بٹھایا اور کھانے کی پلیٹ آگے بڑھا کر کہا کہ "کھانا کھا لو۔"  
سارے مہمان حضورؐ کے اس برتاؤ سے حیرت میں تھے، لیکن  
اسی دعوت میں ایک امیر آدمی بھی موجود تھا۔ وہ اس بیمار بوڑھے کو  
ناپسندی کی نگاہ سے دیکھنے لگا۔ اس کے چہرے اور لباس کی حالت دیکھ  
کر اسے بہت برا لگ رہا تھا۔ اس نے بوڑھے کو اپنے دل میں بہت  
برا، بھلا کہا اور کھانا آدھا چھوڑ کر دسترخوان سے اٹھ کر اپنے گھر چلا گیا۔  
دوسرے مہمان اس آدمی کے اس برتاؤ کو دیکھ کر ناراض ہو گئے۔  
رات ہو رہی تھی۔ امیر آدمی کو نیند نہیں آرہی تھی۔ اس کا چہرہ





## پرنور چہرا

غیبت کبریٰ کا سلسلہ شروع ہونے کے بعد علی ابن مہز یار ہر سال حج پر جاتے تھے۔ وہ حج کے دنوں کی شروعات میں ہی مکہ پہنچ جاتے اور پھر وہاں سے نکلنے والے آخری لوگوں میں سے ہوتے۔

وہ اس لئے ایسا کرتے کیونکہ انہوں نے عالموں سے یہ بات سنی تھی کہ امام زمانہ علیہ السلام حج کے دوران عرفات تشریف لاتے ہیں۔

وہ بیس سال تک امام علیہ السلام کی زیارت کی تمنا میں حج پر جاتے رہے لیکن اپنے محبوب کی زیارت کی توفیق نہ پاسکے۔ جس کی وجہ سے وہ مایوس ہو گئے اور دل میں سوچا کہ اس سال حج پر نہیں جاؤں گا۔

حج کا زمانہ شروع ہونے کے قریب تھا کہ انہوں نے خواب کے عالم میں یہ آواز سنی کہ اس مرتبہ حج پر جاؤ تمہیں تمہاری مراد حاصل ہو جائے گی۔ خواب کے بعد وہ سفر کے لئے نکلے اور مکہ آ گئے۔

ایک رات جب وہ طواف کر رہے تھے تو انہوں نے ایک خوبصورت جوان کو دیکھا جس کا چہرہ نور سے چمک رہا تھا۔ وہ ابن مہز یار کے پاس آئے، اور انہیں گلے سے لگایا اور پوچھا کہ تم کہاں سے آئے ہو؟

علی ابن مہز یار نے کہا ہوا ز سے آیا ہوں۔  
نوجوان نے علی ابن مہز یار سے لوگوں کی حالت پوچھی اور کہا: ابن مہز یار کا کیا حال ہے؟

علی ابن مہز یار نے کہا: میں ہی علی ابن مہز یار ہوں۔  
نوجوان نے کہا: کیا امام حسن عسکری علیہ السلام کی امانت تمہارے پاس موجود ہے؟

علی ابن مہز یار نے کہا: جی ہاں! اور پھر حضرت کی دی ہوئی انگوٹھی اتار کر جوان کو دکھائی۔

اس نے انگوٹھی کو بوسہ دیا اور رونے لگا اور پھر کہا: خدا تمہیں کامیابی دے یہاں کیوں آئے ہو؟

علی ابن مہز یار نے کہا: اے جوان! میں بیس سال سے یہاں آ رہا ہوں اور میری صرف ایک ہی تمنا ہے کہ پردہ غیبت میں پوشیدہ امام کی زیارت کا شرف حاصل کروں۔

نوجوان نے کہا: امام علیہ السلام پوشیدہ نہیں ہیں، تم اپنے گناہوں کی وجہ سے امام علیہ السلام کے دیدار سے محروم ہو۔ پھر کہا: مجھے اجازت مل چکی ہے کہ میں تمہیں امام کی خدمت میں لے جاؤں۔ جب رات کے وقت آسمان پر ستارے نظر آنے لگیں تو تم صفا کی پہاڑی کے قریب آ جانا، میں تمہیں امام کی خدمت میں لے جاؤں گا۔

طے وقت پر علی ابن مہز یار وہاں پہنچے تو وہ جوان موجود تھا۔ دونوں اپنی اپنی سواریوں پر سوار ہو کر چل پڑے۔ کچھ دیر بعد نوجوان نے کہا: نماز شب کا وقت ہے۔ آؤ ہم دونوں نماز پڑھ لیں۔ نماز شب پڑھنے کے کچھ دیر بعد نوجوان نے کہا: نماز صبح کا وقت ہو گیا ہے آؤ صبح کی نماز پڑھ لیں۔ اس کے بعد پھر انہوں نے سفر شروع کیا۔

کچھ دیر کے بعد ایک ایسی وادی میں پہنچے جہاں ایک خیمہ لگا تھا۔ اس خیمے سے نور کی کرنیں پھوٹ کر آسمان تک جا رہی تھیں۔

نوجوان نے کہا: اے علی ابن مہز یار! اپنی سواری سے اترو اور اسے یہیں چھوڑ دو۔ یہ کہیں نہیں جائے گی۔ یہ وادی امان ہے۔

علی ابن مہز یار گھوڑے سے اترے اور کچھ دیر چلتے رہے۔ نوجوان نے ان سے کہا: اب آپ رک جائیں تاکہ میں آپ کے لئے اجازت حاصل کر لوں۔

علی ابن مہز یار رک گئے۔ کچھ دیر بعد نوجوان واپس آیا اور کہا: مبارک ہو، تمہیں اجازت مل گئی ہے۔

علی ابن مہز یار نے خیمے کا پردہ اٹھایا تو اندر امام کا نور اتنا زیادہ تھا کہ علی ابن مہز یار بے ہوش ہونے کے قریب ہو گئے۔ پھر انہوں نے حواس جمع کئے اور حضرت کو سلام کیا۔ امام علیہ السلام نے ان سے عراق کے شیعوں کا حال پوچھا۔ علی ابن مہز یار نے جواب دیا۔

امام زمانہ علیہ السلام نے فرمایا: میں لوگوں کے شور و غل سے دور یہاں رکا ہوں۔

علی ابن مہز یار کے پاس سونے سے بھری ہوئی ایک تھیلی تھی۔ انہوں نے وہ تھیلی تحفے کے طور پر امام علیہ السلام کی خدمت میں پیش کی لیکن آپ نے یہ کہہ کر اسے قبول نہیں کیا کہ تم اسے اپنے پاس رکھو، بہت جلد تمہیں اس کی ضرورت پڑے گی۔





## نائب کی تلاش

احمد دینوری کہتے ہیں: امام حسن عسکری علیہ السلام کی رحلت کے دو سال بعد حج کے لئے میں اردبیل سے چلا اور دینور پہنچ گیا وہاں کے لوگ امام عسکری علیہ السلام کے نائب کو جاننے کے لئے حیران و پریشان تھے۔ دینور کے لوگ میرے آنے سے بہت خوش ہوئے وہاں کے شیعوں نے ۱۳ ہزار درہم سہم امام علیہ السلام کے مجھے دیئے کہ میں سامراجہ امام کے جانشین کے سپرد کروں۔ میں نے کہا کہ ابھی تک امام علیہ السلام کے جانشین کے بارے میں مجھے بھی کوئی خبر نہیں ہے۔ وہ کہنے لگے: ہمیں آپ پر اعتبار ہے جب بھی آپ کو امام کا جانشین ملے آپ ان کے سپرد کر دیجئے گا۔ میں نے ان سے دینار لئے اور وہاں سے چلا آیا۔ شہر کرمانشاہ میں احمد ابن حسن سے ملاقات ہوئی اس نے بھی ایک ہزار درہم اور کچھ تھیلے کپڑے مجھے دئے کہ انھیں امام کے نائب تک پہنچا دوں۔

میں بغداد میں نائب امام علیہ السلام کی تلاش میں تھا۔ مجھے بتایا گیا کہ ۳ لوگ امام کی نیابت کا دعویٰ کر رہے ہیں۔ ان میں ایک کا نام باقظانی تھا میں اس کے پاس گیا اور اس سے دلیل مانگی لیکن اس کے پاس کوئی ایسی چیز نہیں تھی جو مجھے مطمئن کرتی۔ پھر میں اسحاق احمر نامی ایک اور شخص کے پاس گیا وہ بھی میرے لئے سچا ثابت نہ ہو سکا۔ عثمان ابن سعید عمری نام کے تیسرے فرد کے پاس گیا، احوال پرسی کے بعد ان سے کہا کہ لوگوں کے کچھ اموال میرے پاس ہیں اور انھیں امام عسکری علیہ السلام کے نائب تک پہنچانا ضروری ہے۔ بڑا فکر مند ہوں

اور سمجھ میں نہیں آتا کہ کیا کروں۔ اس نے کہا کہ سامراجہ وہاں ابن الرضا (امام عسکری) کے گھر جاؤ وہاں تمہیں امام کا وکیل مل جائے گا۔ میں سامراجہ گیا اور امام کے گھر میں امام کے وکیل کے بارے میں پوچھا۔ دربان نے کہا ذرا انتظار کرو ابھی باہر آتے ہوں گے کچھ دیر بعد ایک شخص آیا اس نے میرا ہاتھ تھاما اور گھر کے اندر لے گیا احوال پرسی کے بعد میں نے اس سے کہا: جبل کی طرف سے میں کچھ اموال لیکر آیا ہوں اور دلیل و شاہد کی تلاش میں ہوں۔ میں مجبور ہوں کہ جس شخص سے نیابت کے سلسلہ میں دلیل حاصل ہو اسی کو یہ اموال دوں۔ اس وقت میرے لئے کھانا لایا گیا اس نے کہا کہ کھانا کھاؤ اور کچھ دیر آرام کرو پھر تمہارا کام بھی دیکھ لیا جائے گا۔ کچھ رات گزرنے کے بعد اس شخص نے مجھے ایک خط لاکر دیا جس میں لکھا تھا کہ: احمد ابن محمد دینوری آیا ہوا ہے اور اتنی مقدار میں رقم، تھیلی اور تھیلے لایا ہے اور تھیلی میں اتنی رقم ہے اور اس کی تمام خصوصیتیں بیان کر دی تھیں۔ مثلاً لکھا تھا کہ: فلاں زرہ ساز کے بیٹے کی تھیلی میں اتنی رقم ہے۔ کرمان سے ایک تھیلی فلاں شخص کی ہے اور فلاں تھیلا احمد ابن ادريس مادرانی کا ہے جس کا بھائی اون بچتا ہے وغیرہ۔

اس خط کے ذریعہ میرا شک و شبہ ختم ہو گیا اور اطمینان ہو گیا کہ عثمان ابن سعید ہی امام کے نائب ہیں۔ امام علیہ السلام نے اس خط میں مجھے حکم دیا تھا کہ ان اموال کو بغداد لے جاؤں اور اسی کے سپرد کروں جس سے ملاقات ہوئی تھی۔



## انتظار

امام صادق علیہ السلام نے فرمایا "اسلام کے پانچ بنیادی ستون ہیں نماز، زکوٰۃ، حج، روزہ اور ولایت۔ جتنی ولایت کے اقرار کے لئے تاکید کی گئی ہے اتنا کسی اور چیز پر زور نہیں دیا گیا ہے۔ لیکن پھر بھی بہت سے لوگ اسلام کے چار بنیادی اصول کو قبول کرتے ہیں مگر ولایت کو قبول نہیں کرتے۔ خدا کی قسم اگر کوئی شخص ساری رات عبادت و نماز میں گزارے اور دن میں روزے رکھے مگر ولایت کو قبول نہ کرے اور اسی حالت میں مر جائے تو اس کی نماز اور روزہ اور کوئی بھی عبادت قبول نہیں ہوگی۔

پیغمبر اکرم کی دوسری حدیث میں بیان ہوا ہے کہ امام کے ظہور کا انتظار عبادت ہے۔ آپ ارشاد فرماتے ہیں: میری امت کا بہترین عمل، خدا سے امام کے ظہور کی دعا کرنا ہے۔ اسی طرح مولا علی سے روایت ہے کہ "سب سے بڑی عبادت خاموشی اور ظہور کا انتظار ہے۔"

امام کے ظہور کا انتظار کرنا غیب پر ایمان رکھنا ہے اور غیب پر ایمان انسان کو نیک عمل کی ترغیب دیتا ہے اور اس کو صحیح عقیدہ پر باقی رہنے کی طاقت عطا کرتا ہے۔

پیارے بچوں جب سے ہمارے امام زمانہ لوگوں کی نظروں سے غائب ہوئے ہیں، تبھی سے بہت سے مسلمانوں کے ذہن میں یہ سوال پیدا ہوتا ہے کہ اب ہماری کیا ذمہ داریاں ہیں؟ کیونکہ ہم لوگ امام علیہ السلام کو قریب سے نہیں دیکھ سکتے اور نہ آپ سے سوالات پوچھ سکتے ہیں تو ہمیں کیا کرنا چاہئے؟ ہمیں کب تک امام علیہ السلام کا انتظار کرنا چاہئے؟

مومن کی اس حالت کو "انتظار فرض" کہتے ہیں یعنی امام زمانہ علیہ السلام کے ظہور کا انتظار کرنا، یہ سوچتے ہوئے امام کا انتظار کرنا کہ وہ رسول اور ائمہ معصومین کے حکم کے مطابق ایک دن ضرور ظہور فرمائیں گے اور اس زمین کو عدل و انصاف سے بھر دیں گے۔

"انتظار فرض"، یعنی امام زمانہ علیہ السلام کی امامت پر مکمل یقین۔ یہ عقیدہ اور یقین توحید، رسالت اور امامت اور تمام باقی اسلامی عقائد کو اپنے اندر سمیٹے ہوئے ہے۔ امام مہدی علیہ السلام کی امامت پر ایمان رکھنا، ولایت پر ایمان کی علامت ہے۔ یہی ایمان تمام اعمال کے قبول ہونے کی شرط ہے۔





پیسوں سے بھری ہوئی ایک تھیلی منگوائی اور ان لوگوں کے پاس بیٹھ کر ہر ایک کو اس میں سے کچھ پیسے دیئے۔ سب لوگ حیرت کے ساتھ امام علیہ السلام کو دیکھ رہے تھے۔ امام علیہ السلام نے انہیں تسلی دی اور ان سے کہا کہ آئندہ بھی آیا کریں۔

جب دوسرے لوگوں نے ان جذام کے مریضوں کو امام سجاد علیہ السلام کے گھر جاتے دیکھا تو کہنے لگے کہ "امام سجاد علیہ السلام نے کیسے جذام کے مریضوں کو اپنے گھر پر بلایا کیا وہ اس کے انجام سے نہیں ڈرتے۔ کیا وہ نہیں جانتے کہ یہ لوگ مردہ اور بے فائدہ ہیں؟" لیکن امام سجاد علیہ السلام کچھ اور ہی سوچ رہے تھے۔ وہ ان جذام کے مریضوں کے دکھی دلوں کے بارے میں سوچ رہے تھے، جو غم سے بھرے ہوئے تھے۔

سے بات چیت کی اور پھر لوگوں کو اپنے گھر آنے کی دعوت دی۔ ان لوگوں کو بڑی حیرت ہوئی، کیونکہ ان کی بیماری کی وجہ سے لوگ نہ تو ان سے باتیں کرتے تھے اور نہ ہی ان کے ساتھ کھاتے پیتے تھے۔

بہر حال وہ امام علیہ السلام کی دعوت پر بہت خوشی کے ساتھ امام سجاد کے گھر پہنچ گئے۔ امام علیہ السلام نے حکم دیا تھا کہ ان لوگوں کے لئے بہت اچھا اور زیادہ تعداد میں کھانا تیار کیا جائے۔ کھانا تیار ہوا تو جذام کے مریضوں کے سامنے پیش کیا گیا۔ ان لوگوں نے خوش ہو کر کھانا کھایا۔ شاید بڑے دنوں کے بعد انہوں نے اتنا مزہ دار کھانا کھایا تھا جو اتنی محبت کے ساتھ ان لوگوں کے سامنے پیش کیا گیا تھا۔

کچھ دیر بعد امام زین العابدین علیہ السلام نے



## مہربان دل

امام سجاد علیہ السلام چلتے ہوئے ان لوگوں کے پاس پہنچے۔ جیسے ہی امام کی نظر ان لوگوں پر پڑی، امام کچھ سوچنے لگے۔ وہ لوگ بھی اپنی دکھ بھری آنکھوں سے امام کو دیکھ رہے تھے۔ امام سجاد علیہ السلام ان لوگوں کے پاس رک گئے اور دل ہی دل میں کہنے لگے کہ "خدا گھمنڈ کرنے والوں کو پسند نہیں کرتا۔"

امام سجاد علیہ السلام نے ان لوگوں کو سلام کیا اور سکون کے ساتھ ان کے پاس بیٹھ گئے۔ وہ سب بہت خوش ہوئے اور امام علیہ السلام کے پاس جمع ہو گئے۔ وہ حیرت اور خوشی سے امام علیہ السلام کے چہرے کو دیکھ رہے تھے۔ انہیں یقین نہیں آ رہا تھا کہ کوئی شخص ان کے پاس آ کر بیٹھے گا اور ان کے ساتھ بات کرے گا۔ امام سجاد علیہ السلام نے فرمایا: کہ "آج میرا روزہ ہے!"

امام علیہ السلام کچھ دیر ان کے پاس بیٹھے اور ان

ایک دن امام زین العابدین علیہ السلام مدینہ کے ایک محلے سے گزر رہے تھے۔ وہ اکیلے اور پیدل تھے۔ وہاں راستے میں جذام کی بیماری میں گرفتار کچھ لوگ بیٹھے ہوئے تھے۔ (جذام کی بیماری میں گرفتار لوگوں کا جسم گلے لگتا ہے) وہ لوگ بہت غریب تھے۔ کوئی ان پر توجہ نہیں دیتا تھا۔ جو کوئی وہاں سے گزرتا وہ ان لوگوں سے فاصلہ بنا کر گزرتا اور انہیں دیکھ کر ان کا مذاق اڑاتا۔ وہ لوگ بہت دکھی رہتے تھے، اسی لئے یہاں پر ایک دوسرے کے ساتھ جمع ہوئے تھے۔ ان کے پاس کھانے کے لئے روٹی بھی نہیں ہوتی تھی۔ لوگ ان سے دور رہتے تھے اور نہ ہی ان کے ساتھ کھانا کھاتے تھے۔ لوگ کہتے تھے کہ جذام ایک خطرناک اور پھیلنے والی بیماری ہے۔ ہمیں ان لوگوں کو اپنے آپ سے دور کرنا ہوگا جس سے کہ یہ لوگ جلدی مرجائیں اور ان کی بیماری جڑ سے ختم ہو جائے۔"



ہدی مشن  
WWW.HUDAMAGS.COM

قرآن مجید | احکام | مسائل | حوالہ و جواب | فضائل و مناقب | شیعہ | سنی | دیگر مذاہب

visit us: [www.hudamags.com](http://www.hudamags.com)

اہل بیت | اہل بیت | اہل بیت

اہل بیت | اہل بیت | اہل بیت

اہل بیت | اہل بیت | اہل بیت



## تفسیر قرآن

### سورہ انسان (۲)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

هَلْ أَتَى عَلَى الْإِنْسَانِ حِينٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْئًا مَّذْكُورًا ﴿١﴾ إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ نَّبْتَلِيهِ فَجَعَلْنَاهُ سَمِيعًا بَصِيرًا ﴿٢﴾ إِنَّا هَدَيْنَاهُ السَّبِيلَ إِمَّا شَاكِرًا وَإِمَّا كَفُورًا ﴿٣﴾ إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَلَاسِلَ وَأَغْلَالًا وَسَعِيرًا ﴿٤﴾ إِنَّ الْأَبْرَارَ يَشْرَبُونَ مِن كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا ﴿٥﴾

ترجمہ:

یقیناً انسان پر ایک ایسا وقت بھی آیا ہے کہ جب وہ کوئی قابل ذکر شے نہیں تھا (۱) یقیناً ہم نے انسان کو ایک ملے جلے نطفہ سے پیدا کیا ہے تاکہ اس کا امتحان لیں اور پھر اسے سماعت اور بصارت والا بنادیا ہے (۲) یقیناً ہم نے اسے راستہ کی ہدایت دے دی ہے چاہے وہ شکرگزار ہو جائے یا کفرانِ نعمت کرنے والا ہو جائے (۳) بیشک ہم نے کافرین کے لئے زنجیریں - طوق اور بھڑکتے ہوئے شعلوں کا انتظام کیا ہے

(۴) بیشک ہمارے نیک بندے اس پیالہ سے پئیں گے جس میں شراب کے ساتھ کافور کی آمیزش ہوگی (۵)

تفسیر:

ایک سوال؟

اس وقت آپ کی عمر کتنی ہے؟

۷، سال، ۱۰، سال، ۱۲، سال، ۱۵، سال، ۲۰، سال، ۴۰، سال، ۵۰ سال! کیا آپ یہ بھی بتا سکتے ہیں کہ آپ جتنے سال کے ہیں اس سے دو سال پہلے آپ کہاں تھے؟ آپ کا نام و نشان اور پتہ کیا تھا؟ ہر بچہ اور بڑا یہی جواب دیگا کہ اس سے پہلے ہم کہاں تھے یہ ہمیں خود نہیں معلوم ہے!

خداوند عالم نے اس سورہ کی شروعات میں ہر آدمی کی اسی طرف توجہ دلائی ہے کیا تمہیں یہ دھیان ہے کہ اس دنیا میں آنے سے پہلے تم کہاں تھے؟۔۔۔ اور آج اللہ نے تمہیں اتنا نام آور بنادیا ہے۔ ہر طرف تمہارے چرچے ہیں۔ اخبار، ٹوی۔۔۔ ہر جگہ تمہارا ہی ذکر ہے۔

کیا تم نے کبھی یہ سوچا کہ یہ کیسے ہو گیا۔۔۔ یہ سب تمہاری تعلیم، دولت یا خاندان کا کرشمہ ہے یا تمہارے پیدا کرنے والے پروردگار کا احسان ہے؟

کہ انسان نے تمہیں زیرو (صفر) سے پیدا کر کے اتنی زیادہ پیلسٹی عطا فرمادی۔۔۔ پھر بھی انسان خدا کا شکر ادا نہیں کرتا بلکہ اور زیادہ غرور و تکبر کا مظاہرہ کرنے لگتا ہے۔

ذرا خدا کی شان تو دیکھئے کہ پانی کے ایک قطرے پر اس نے کیا فنِ تخلیق اور آرٹ کے کیا فن پارے تیار کر کے رکھ دئے ہیں۔ (مِن نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ)

تمام انسانوں کی شکل و صورت رنگ و نسل، قد و قامت

، زبان اور لہجہ۔۔۔ سب کچھ تو نرا لا ہے۔

اب سوال یہ ہے کہ آدمی کو ایسا کیوں بنایا گیا ہے؟

جواب: خدا نے اس آدمی کو کسی حکمت اور مقصد کے لئے

بنایا ہے۔ اور اسے بے کار نہیں چھوڑ دیا ہے بلکہ وہ اس کا امتحان لے گا اور اسے آزما یا جائے گا۔ صبح و شام، دن و رات، سکون اور آرام یا مشکلات سب میں ہر وقت اور ہر لمحے ہم امتحان سے گذر رہے ہیں۔ جیسا کہ تاریخ گواہ ہے کہ اس دنیا میں آنے والے سبھی انسانوں کا امتحان لیا گیا ہے۔ اسی طرح اللہ تعالیٰ سر سے لے کر پیر تک ہمارے بدن کے ہر حصہ کا امتحان لے رہا ہے اور پیدائش سے مرنے تک ہم امتحان گاہ (ایکزامِ حال) میں ہیں۔ البتہ فرق صرف اتنا ہے کہ کبھی یہ امتحان آسان ہو جاتا ہے اور کبھی سخت ہوتا ہے۔

جو جس منزل میں کامیاب ہو جاتا ہے وہ امتحان کے اونچے مرحلے میں پہنچ جاتا ہے یعنی امتحان پھر بھی جاری رہتا ہے۔ اور اس کی آزمائش اور زیادہ سخت ہو جاتی ہے۔

اللہ تعالیٰ نے ہم سب کو راستہ دکھا دیا ہے۔ (انا ہدیناہ۔) صحیح راستہ جاننے کے تین طریقے ہو سکتے ہیں:

۱۔ ہر انسان کی فطرت اسے صحیح راستہ بتاتی ہے۔ (فالہمہما فجورہا و تقواہا) خدا نے انسان کے نفس کو خیر اور شر کا اشارہ دیدیا ہے۔

۲۔ انسان تعلیم، غور و فکر، مشورہ، تجربہ اور مطالعہ سے بھی ہدایت حاصل کر سکتا ہے۔

۳۔ جہاں مذکورہ چیزوں سے راستہ نہ معلوم ہو سکے تو انبیاء اور اولیاء کی تبلیغ سے ہدایت حاصل کر لے۔

اسی طرح شکر بھی تین طرح کا ہو سکتا ہے۔

۱۔ دل سے شکر یعنی جو نعمت کے بارے میں یہی سمجھیں کہ یہ

خدا کی دی ہوئی ہے۔

۲۔ عملی: خدا نے جو نعمتیں دی ہیں ان کو صرف صحیح طریقے سے استعمال کرے۔

۳۔ زبانی: زبان سے، الحمد للہ رب العالمین، کہتا رہے۔

حدیث:

رسول اکرمؐ نے ارشاد فرمایا: شکر کرنے والے کی چار نشانیاں ہیں۔

۱۔ نعمت ملنے پر شکر ادا کرے

۲۔ مصیبت اور بلا میں صبر کرے۔

۳۔ اللہ تعالیٰ کی تقسیم پر راضی اور قانع رہے۔

۴۔ اللہ تعالیٰ کے علاوہ کسی کی حمد اور تعظیم نہ کرے

(تحف العقول ص ۲۱)

امام جعفر صادقؑ نے فرمایا: جو شخص ہر دن صبح کے وقت چار مرتبہ ”الحمد للہ رب العالمین“ کہے اس نے اس دن کا شکر ادا کر لیا اور جو رات کی شروعات میں یہی کہے اس نے رات کا شکر ادا کر دیا ہے۔ (مکارم اخلاق ص ۳۰۸)

یہ بھی یاد رہے کہ انسان چاہے جتنا شکر ادا کر لے وہ شاکر ہی کہا جائے گا یعنی معمولی سا کفر (ناشکری) درحقیقت بہت بڑی ناشکری (کفودا) ہے

کیونکہ یہاں کوئی تیسرا راستہ موجود نہیں ہے۔

اور ناشکری کی سزا خدا نے یہ رکھی ہے:

۱۔ پیروں میں زنجیریں ۲۔ گردن میں طوق

۳۔ جلتی ہوئی آگ

جبکہ شکر گزاروں کے لئے اس کی نعمتیں بے شمار ہیں۔ (جاری)







مئی, 2017

